हाटकेश्वर (वडनगर)

हाटकेश्वर के माहात्म्य के बारे में स्कंदपुराण में कहा गया है कि-

आनर्तविषये रम्यं सर्वतीर्थमयं शुभम्।
हाटकेश्वरजं क्षेत्रं महापातकनाशनम्।
तत्रैकमपि मासार्द्धं यो भक्त्या पुजयेद्धरम्।
स सर्वपापयुक्तोऽपि शिवलोके महीयते।।
अत्रान्तरे नरा ये च निवसन्ति द्विजोत्तमाः।
कृषिकर्मोद्यताश्चापि यान्ति ते परमां गतिम्।।
अपि कीटपतंगा ये पशवः पक्षिणो मृगाः।
तस्मिन् क्षेत्रे मृता यान्ति स्वर्गलोकं न संशयः।।
पुनन्ति स्नानदानाभ्यां सर्वतीर्थान्यसंशयम्।
हाटकेश्वरजं क्षेत्रं पुनर्वासात्पुनाति च।।
वापीकूपतडागेषु यत्र यत्र जलं द्विजाः।
तत्र तत्र नरः स्नातः सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

(स्कं. नागरखं. 27/76, 77, 91, 92, 95)

'आनर्तदेश में परम मनोहर एवं सर्वतीर्थमय शुभ हाटकेश्वर क्षेत्र है, जो महापातकों का भी नाश करनेवाला है। जो उस क्षेत्र में पंद्रह दिन भी भक्तिपूर्वक भगवान् शंकरजी की पूजा करता है, वह सभी पापों से युक्त होने पर भी भगवान् शंकर के लोक में सम्मानित होता है। यहाँ के रहनेवाले खेती करनेवाले किसान भी परमगति को प्राप्त होते हैं। (मनुष्य की तो बात ही क्या,)इस क्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त हुए, कीट-पतंग, पशु-पक्षी और मृग भी निस्संदेह स्वर्ग चले जाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि सभी तीर्थ स्नान-दान करने से पवित्र करते हैं; किंतु हाटकेश्वर क्षेत्र तो केवल रहने मात्र से ही पवित्र कर डालता है। ब्राह्मणों! यहाँ बावली, कुआँ, तालाब या जहाँ-कहीं के भी जल में स्नान करनेवाला मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है।'

भगवान् शङ्कर के तीन मुख्य लिङ्गों में एक हाटकेश्वर है- **'पाताले हाटकेश्वरम्'** कहा जाता है; हाटकेश्वर का मूललिङ्ग तो पाताल में है। नागर ब्राह्मणों के हाटकेश्वर कुलदेवता हैं। इसलिये जहाँ-जहाँ नागर ब्राह्मणों ने अपनी बस्ती बसायी, वहाँ-वहाँ उनके द्वारा स्थापित हाटकेश्वर महादेव का मन्दिर भी है। इस प्रकार देश में हाटकेश्वर महादेव के मन्दिर बहुत अधिक हैं।

सौराष्ट्र-गुजरात में तो गाँव-गाँव में हैं; किंतु इनमें भी एक प्रधान मन्दिर है। स्कन्दपुराण में इस प्रधान हाटकेश्वर-लिङ्ग का बहुत माहात्म्य आया है। इस लिंग की स्थापना के बारे में पौराणिक इतिहास इस प्रकार है।

चमत्कारपुर में चित्रशर्मा नाम के एक बड़े यशस्वी ब्राह्मण थे। एक दिन उनके मन में यह बात पैदा हुई कि 'मैं पाताल से हाटकेश्वरजी को यहाँ लाकर भक्तिपूर्वक दिन-रात उनकी पूजा करूँ।' ऐसा निश्चय करके दीर्घकालतक निष्ठा के साथ कठोर तपस्या करने लगे। दीर्घकालतक तपस्या करने के पश्चात् भगवान् शंकर प्रसन्न हुए और आदरपूर्वक बोले-'विप्रवर! अपने मनोरथ के अनुसार वर माँगो।'

चित्रशर्मा बोले-देव! आप पाताल से हाटकेश्वरलिंग के रूप में यहाँ पधारें। उत्तर में भगवान् शिव बोले-द्विजश्रेष्ठ! मेरा लिंगमय विग्रह सर्वत्र अचल होता है, तुम हाटक (सुवर्ण) के द्वारा निर्मित दूसरे शिवलिंग की स्थापना करो। वही संसार में हाटकेश्वर नाम से विख्यात होगा। जो शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को सोमवार के दिन श्रद्धापूर्वक उस लिंग की पूजा करेगा, उसे आदि हाटकेश्वर की पूजा से होनेवाले कल्याणमय फल की प्राप्ति होगी।

ऐसा कहकर भगवान् शिव अन्तर्धान हो गये। चित्रशर्मा ने मनोहर मंदिर का निर्माण करके भक्तिभाव से स्वर्णमय लिंग स्थापित किया और उसी की पूजा प्रारंभ की। उस लिंग की ख्याति तीनों लोकों में फैल गयी। दूर-दूर से लोग आकर उस लिंग की पूजा करने लगे। यह देखकर दूसरे ब्राह्मणों ने यह विचार किया कि 'हम लोग भी भगवान् को संतुष्ट कर उनके तीनों काल में निवास करनेवाले 68 क्षेत्रों[1] के समूह को यहाँ बुलायें।' तदनन्तर उन सबके सहस्रों वर्ष दुष्कर तप द्वारा संतुष्ट हो भगवान् शंकर ने उनसे वर माँगने को कहा।

तब ब्राह्मणों ने कहा-सुरश्रेष्ठ! आपके जो 68 क्षेत्र परम धन्य कहे जाते हैं और आदि शिवलिंगों की स्थिति के कारण परम पूजनीय माने जाते हैं, वे सभी क्षेत्र यहाँ प्रतिष्ठित हों। भगवान् शंकर ने उनके निवेदन को यह सोचकर स्वीकार कर लिया कि कलियुग में पृथ्वी के प्रायः सभी तीर्थ और क्षेत्र नष्ट हो जायँगे, इसलिये सभी तीर्थ एक स्थान पर एकत्र हो जायँ तो अच्छा रहेगा। फलस्वरूप हाटकेश्वर में सभी क्षेत्र एवं तीर्थ निवास करने लगे।

पश्चिम-रेलवे की अहमदाबाद-दिल्ली लाइन पर अहमदाबाद से 43 मील दूर मेहसाणा स्टेशन है। मेहसाणा से एक लाइन तारंगाहिलतक जाती है। इस लाइन पर मेहसाणा से 21 मील दूर वडनगर

1. भगवान् शिव के 68 क्षेत्र इसी पुस्तक में दिये गये हैं। कृपया तत्संबंधी अध्याय देखें।

स्टेशन है।(यह वडनगर रतलाम-इन्दौर लाइन पर पड़नेवाले बड़नगर स्टेशन से भिन्न है।) इसी वडनगर में हाटकेश्वर का मन्दिर है।

नागर ब्राह्मणों का मूलस्थान यह वडनगर है। उनके कुलदेव हाटकेश्वर महादेव का यहाँ सबसे प्रधान मन्दिर है। उसके अतिरिक्त यहाँ अनेक देव-मन्दिर तथा जैन-मन्दिर हैं।

कहते हैं त्रिलोकी मापते समय भगवान् वामन ने पहला पद वडनगर में ही रखा था। वडनगर का प्राचीन नाम चमत्कारपुर है। भगवान् श्रीकृष्ण परमधाम पधारने से पूर्व यहाँ पधारे थे। यहाँ यादवों के साथ पाण्डव भी पधारे थे और उन्होंने यहाँ अनेक शिवलिङ्गों की स्थापना की थी। नरसी मेहता के पुत्र शामलदास का यहाँ विवाह हुआ था।

वडनगर का मुख्य मन्दिर हाटकेश्वर ग्राम के पश्चिम है। गाँव के पूर्वभाग में किले में देवी-मन्दिर है। इन्हें श्रीअमथेर माताजी कहते हैं। इसके अतिरिक्त वडनगर-क्षेत्र में ये मुख्य तीर्थ हैं- 1-सप्तर्षिआश्रम—विश्वामित्र-सरोवर के समीप सप्तर्षियों की मूर्तियाँ हैं; 2- विश्वामित्रतीर्थ—यह सरोवर गाँव के पास है; 3- पुष्कर-तीर्थ—गाँव से थोड़ी दूर पर कुण्ड है; 4- गौरीकुण्ड—यहाँ लोग मुख्य पर्वों पर स्नान तथा श्राद्धादि करते हैं; 5- कपिला नदी—यह गाँव के पास है, किंतु वर्षा में ही इसमें जल रहता है; 6- नृसिंह-मन्दिर और अजपाल महादेव-मन्दिर। इनके अतिरिक्त गाँव में बालाजी, श्रीराम, स्वामिनारायण, लक्ष्मी-नारायण, नर-नारायण, द्वारिकाधीश, तुलसी-मन्दिर, बलदेवजी, कुशेश्वर, ओंकारेश्वर, महाकाली, बहुचराजी, शीतला माता, वाराही माता, भुवनेश्वरी आदि के मन्दिर दर्शनीय हैं।

गाँव के आसपास शर्मिष्ठा-सरोवर, कुम्भेश्वर, महाकालेश्वर, जालेश्वर, सोमनाथ के मन्दिर, रामटेकरी, नरसी मेहताकी वाव, पिठोरा माता का मन्दिर, नागधरा(शेषजी का मन्दिर), कीर्ति-स्तम्भ, आशापुरी देवी तथा अम्बाजी का मन्दिर, अमरकुण्ड-सरोवर, खोखा गणपति, भुरोड-छबीला और खोडीआर हनुमान् का मन्दिर - ये तीर्थस्थान हैं।

(यह अध्याय गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के तीर्थांक तथा संक्षिप्त स्कंदपुराणांक पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁